C7a pedagogy of Home Science Unit-3

Q.→ गृह विज्ञान शिक्षण की गृह प्रबन्धन के परिप्रेक्ष्य मे महत्ता का वर्णन करें।

Ans→ गृह विज्ञान का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। गृह व्यवस्था तथा गृह विज्ञान के अन्तर्गत हमारे रहन-सहन, भोजन आदि से सम्बन्धित तथ्य आते हैं। भोज्य पदार्थों का उत्पादन, उपयोग एवं सुरक्षा, घर, वस्त्र, बर्तन तथा कमरों आदि की सफाई एवं सुरक्षा, मातृत्व कला, बाल विकास, सामान्य रोग, हमारा शरीर तथा उसके अवयव शुद्ध हवा, पानी, प्रकाश स्वास्थ्य तथा सिलाई आदि सभी गृह व्यवस्था तथा गृह विज्ञान के क्षेत्र एवं विषय हैं।

किसी भी विज्ञान अथवा शास्त्र के व्यवस्थित तथा सम्पूर्ण अध्ययन के लिये उसके विषय क्षेत्र अथवा अध्ययन क्षेत्र का उचित निर्धारण किया जाये। विषय क्षेत्र के निर्धारण के पश्चात सम्बन्धित विज्ञान का अध्ययन सरल हो जाता है।

गृह के समस्त कार्यों को उत्तम ढंग से तथा निश्चित साधनों के द्वारा करने एवं अधिक से अधिक सुख-सुविधा प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करने की कला ही गृह-प्रबन्ध है। परिवार के आय-व्यय का हिसाब तथा बजट बनाना आदि का अध्ययन भी इसी विषय के अन्तर्गत किया जाता है। इसमें परिवार की आवश्यकताओं तथा उनके नियोजन का भी अध्ययन किया जाता है। गृह व्यवस्था के अतिरिक्त गृह कला का भी अध्ययन गृह विज्ञान मे किया जाता है। इसमें कला के सिद्वांतों, रंगो एवं ~~डिजा~~ डिजायनों का तालमेल, गृह-सज्जा, फर्नीचर तथा

सजावट के सामानों का ज्ञान एवं उनके उचित रखरखाव आदि का अध्ययन किया जाता है।

गृह विज्ञान के अन्तर्गत आहार तथा पोषण विज्ञान का भी अध्ययन किया जाता है। आहार तथा पोषण विज्ञान एक विस्तृत क्षेत्र वाला विज्ञान है इस विज्ञान के दो पक्ष हैं, पहला पक्ष है आहार, दूसरा पक्ष है पोषण। इन दोनों पक्षों से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया जाता है जिसमे मुख्य है- आहार के कार्य, आहार के तत्व, भोजन पदार्थों मे पोषक तत्व, सन्तुलित आहार आयोजन, भोजन संरक्षण, पोषण की प्रक्रिया तथा आहार द्वारा रोगों का निदान। इन सभी ~~के~~ तथ्यों का प्रत्येक व्यक्ति के लिये विशेष महत्व है।

गृह विज्ञान के अन्तर्गत शरीर विज्ञान तथा स्वास्थ्य रक्षा का विधिवत अध्ययन किया जाता है। इस विषय मे शरीर की रचना, अंगों की बनावट, विभिन्न संस्थानों की कार्य प्रणाली तथा महत्व आदि का अध्ययन किया जाता है। पाचन संस्थान, रक्त परिसंचरण संस्थान, श्वसन एवं उत्सर्जन आदि की कार्य प्रणाली तथा महत्व आदि का अध्ययन इसी विषय के अन्तर्गत किया जाता है। इसके अतिरिक्त इस विषय के अन्तर्गत स्वास्थ्य की रक्षा के लिये आवश्यक नियमों का भी अध्ययन किया जाता है। इसमें साधारण रोगों से बचने के उपायों का भी अध्ययन किया जाता है।

घर में समय-समय पर कोई न कोई दुर्घटना हो ही जाती है।

ये दुर्घटनाएँ कहीं भी किसी भी समय हो सकती हैं और प्रत्येक दुर्घटना के अवसर पर डॉक्टर उपस्थित हो, यह सम्भव नहीं है। डॉक्टर के आने के पूर्व दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को जो आवश्यक सहायता एवं उपचार प्रदान किया जाता है, उसका भी इस विषय के अन्तर्गत अध्ययन किया जाता है।

गृह विज्ञान के अध्ययन द्वारा छात्राएँ अपने जीवन को सुखमय बना सकती हैं तथा अपना तथा अपने परिवार का जीवन-स्तर ऊँचा उठा सकती है। वे गृह विज्ञान से बजट बनाना तथा मितव्ययता सीखती हैं। इससे उन्हे जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामो की जानकारी होती है तथा परिवार नियोजन का महत्व पता चलता है। अन्य व्यावहारिक तथ्यों का भी ज्ञान होता है; जैसे- रसोईघर की सुव्यवस्था, फर्नीचर का रख-रखाव, गृह सज्जा तथा प्राथमिक चिकित्सा आदि।

गृह विज्ञान का महत्व केवल घर परिवार तक ही सीमित नहीं है अपितु इसका व्यावसायिक तथा व्यापारिक महत्व भी है। जहाँ घरेलू स्तर पर बालिकाएँ गृह विज्ञान के ज्ञान से परिवार मे एक गृहिणी, कार्यकर्ता, नेता, व्यवस्थापिका, निर्देशिका एवं नियंत्रिका की भूमिका निभा सकती है वहीं वे गृह विज्ञान मे व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर स्वयं की औद्योगिक संस्था भी खोल सकती हैं तथा अनेक लोगों को रोजगार भी दे सकती है। विद्यार्थी गृह विज्ञान की शिक्षा को गाँवों और सहरों मे प्रसारित कर लोगो को इस शिक्षा को व्यवहार मे लाने के लिये प्रोत्साहित कर सामाजिक

एवं सामुदायिक जीवन को उज्ज्वल एवं उन्नत बनाने में सहायता कर सकते हैं।

समाज या राष्ट्र की सबसे छोटी इकाई परिवार या घर है। यदि परिवार सुखी और समृद्ध होगा तो समाज और राष्ट्र भी प्रगति के पथ पर चलता जायेगा। अन्य शब्दों में परिवार की प्रगति या समृद्धि एक प्रकार से राष्ट्र या समाज की प्रगति है। अतः यदि हम राष्ट्र या समाज की प्रगति चाहते हैं तो परिवार की ओर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है।